Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, DEC-JAN, 2022, VOL-10/49

लघु कथाओं में पर्यावरणीय विमर्श

सरिता वर्मा[1], Ph. D. & तरुणा[2]

[1] *(अध्यक्ष)*

[2] *(शोधार्थी), हिंदी विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ (उ0प्र0)*

Paper Received On: 25 JAN 2022

Peer Reviewed On: 31 JAN 2022

Published On: 1 FEB 2022

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

फसल एवं उपजाऊ भूमि पर आए पर्यावरणीय प्रदूशण के प्रभाव और जल संकट के गहराते प्रभाव का अध्ययन पर्यावरण विमर्श के अंतर्गत आता है। हमारी धरती और इसके आसपास के कुछ हिस्सों को पर्यावरण में शामिल किया जाता है। इसमें सिर्फ मानव ही नहीं, बल्कि जीव—जंतु और पेड़—पौधे भी शामिल किए गए हैं। यहां तक कि निर्जीव वस्तुओं को भी पर्यावरण का हिस्सा माना गया है। यह कहा जा सकता हैं कि धरती पर आप जिस किसी चीज को देखते और महसूस करते हैं, वह पर्यावरण का हिस्सा है। इसमें मानव, जीव—जंतु, पहाड़, चट्टान जैसी चीजों के अलावा हवा, पानी, ऊर्जा आदि सम्मिलित हैं।

पर्यावरण अर्थ : हिन्दी शब्द पर्यावरण का 'परि' तथा 'आवरण' शब्दों का युग्म है। 'परि' का अर्थ हैं — 'चारों तरफ' तथा 'आवरण' का अर्थ हैं —'घेरा' अर्थात प्रकृति में जो भी चारों ओर परिलक्षित है यथा—वायु, जल, मृदा, पेड़—पौधे तथा प्राणी आदि सभी पर्यावरण के अंग हैं।[1]

वैश्विक समाज में प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दे : पेयजल संकट, ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक ताप), ऊसर (बंजर) भूमि, भूस्खलन, बाढ़, सुनामी, समुद्री जल स्तर का बढ़ना, हिमखंडों (ग्लेशियरों) का पिघलना, विभिन्न प्रकार के प्रदूशण प्लास्टिक कचरा आदि वर्तमान परिवेश के पर्यावरणीय मुद्दे हैं।

साहित्य और पर्यावरण में अंतर्संबंध : साहित्य और पर्यावरण का अंतर्संबंध सृष्टि के आदिकाल से ही स्थापित रहा है साहित्य पर्यावरण की छोटी से छोटी गतिविधियों को भी स्वयं में समाहित किए हुए है। वैदिक साहित्य से लेकर अद्यतन साहित्य तक पर्यावरण उसका अभिन्न अंग रहा है।

लघुकथाओं में पर्यावरण विमर्श : हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श को पर्याप्त स्थान मिला है। साहित्य की विधाओं कविता, कहानी, उपन्यासों में जागरूक लेखकों ने समय—समय पर अपनी रचनाओं के

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

माध्यम से मनुश्य को पर्यावरण के प्रति सावधान किया है। साहित्य की अन्य विधाओं में पर्यावरण विमर्श को पर्याप्त स्थान मिला है लेकिन इक्कीसवीं सदी की लघुकथाओं में पर्यावरण को बहुत कम स्थान मिला है। गिने–चुने लेखकों ने अपनी लघुकथाओं में पर्यावरण विमर्श पर चिंतन व्यक्त किया है। आधुनिक युग की लघुकथाकार 'डॉ. लता अग्रवाल' के लघुकथा संग्रह 'धीमा जहर' में प्लास्टिक कचरे पर खासा चिंतन व्यक्त किया है। लेखिका की लघुकथा में पॉलीथीन के बढ़ते प्रयोग को रावण से ज्यादा खतरनाक वर्णित किया गया है। यथा–

''मतलब यह कि मैंने सिर्फ माता सीता का अपहरण किया था, इसलिए आज तक परिणाम भोग रहा हूं, तुमने तो जाने कितने जीवों की जान ले ली, नदियों के प्रवाह को रोक दिया...., इतना ही नहीं धरती माता को भी बंजर करने में कोई कसर नहीं रखी। मैं तो हर वर्ष याद भी किया जाता हूं क्योंकि एक बुराई के अलावा मुझ में कई अच्छाइयां भी हैं।''

''ऐं....! ''

''हां ! सोचो ! सोचो तुमने अपने कितने दुश्मन खड़े कर लिए हैं। अब सबने मिलकर तुम्हारे अस्तित्व को मिटाने का प्रण कर लिया है। शीघ्र ही तुम अतीव की वस्तु बनकर रह जाओगी। क्योंकि तुम मुझसे बड़ी रावण हो। पॉलिथीन अपने ही अपराध बोध में सिमटी खड़ी थी।''[2]

लेखिका की एक और लघुकथा "वेंटिलेटर" में सेठ धनराज हार्ड अटैक होने पर अस्पताल में वेंटिलेटर पर हैं। उनकी सांसें अटक रही हैं। सेठ कराहते हुए पॉलीथीन के प्रकोप से पाठकों को इस प्रकार सचेत कर रहे हैं–

''जैसे अधिक वसा के जमने से तुम्हारी शिराओं में रक्त का प्रवाह रुक गया, तुम्हारी सांसे अटक रही हैं, बेचैनी महसूस कर रहे हो। उसी तरह प्लास्टिक की पन्नी या बोतलों ने मेरे उद्गम स्थल पर जमकर मेरे प्रवाह को अवरुद्ध कर दिया है, मेरी भी सांसो को संकट में डाल दिया। तुम्हारी तरह मैं भी वेंटिलेटर पर हूं, कृत्रिम सांस के सहारे जी रही हूं। न जाने कब डोर टूट जाए, उसने कराते हुए कहा।''[3]

लगातार बढ़ रहे पॉलीथीन के प्रयोग से हर कोई चिंतित है लेकिन इससे छुटकारे का प्रयास नहीं किया जाता। दो– चार दिन सरकारी अभियान चलते हैं इस पर रोकथाम लगाने के फिर वही हालात। 'डॉ. लता अग्रवाल' की एक लघु कथा में दादा जी के माध्यम से लेखिका परिजनों से पॉलीथीन का प्रयोग नहीं करने की सलाह दे रही हैं। यथा–

''आज सुबह–सुबह दादा जी घर के सभी लोगों को अखबार की महत्वपूर्ण खबर जोर से पढ़कर सुना रहे थे, ''अरे ! सुनो... सुनो, सरकार ने प्लास्टिक की थैलियों पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय ले लिया है। अखबार में लिखा है अब आप जब भी बाजार सब्जी, दूध या कुछ सामान लेने जाओ तो कपड़े का थैला साथ लाएं। अब नए कानून के अनुसार प्लास्टिक प्रयोग करने वालों पर एक लाख का

दंड और 5 साल की सजा का प्रावधान किया है। दादाजी के इतना कहते ही स्टोर रूम में रखी कपड़े की सारी थैलियों ने मुस्कुराते हुए अपने—अपने स्थान फिर से सहेज लिए। प्लास्टिक की थैलियां उनके पीछे अपना अस्तित्व समेटे चुपचाप खड़ी थीं।''[4]

प्लास्टिक कचरे से भूमि की उर्वराशक्ति समाप्त हो रही है। वह बंजर हो रही है। उसमें बीजों का अंकुरण नहीं हो रहा। लघु कथा 'नपुंसक बीज' में लघु कथाकार ने इस ओर अपना चिंतन कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है—

''उखाड़ कर फेंक दे इस बीज को, यह नपुंसक है। इससे कोई फल नहीं मिलने वाला। देखो कितने दिन हो गए मगर अंकुरण नहीं हुआ इसमें। किसान ने अपनी पत्नी से कहा।

''क्यों ना इसे निकाल कर दूसरी जगह लगा कर देखें। हो सकता है बीज ठीक हो, जमीन में कोई कमी हो। मेरा मतलब जमीन ही बंजर हो।''

''देखती नहीं, बाकी बीज भी इसी जमीन में पककर फले—फूले हैं।''

''हो सकता है हवा पानी में कमी रह गई हो।''

''नहीं...नहीं यह बीज ही नपुंसक है।'' कहते हुए किसान ने जमीन के पेट पर कुदाली चला बीज निकालकर गूढ़े पर फेंक दिया। जमीन की कोख में बीज के नीचे पड़ा प्लास्टिक मुस्कुरा रहा था।''[5]

लघु कथाकारों ने प्लास्टिक के कचरे से होने वाले नुकसान को धार्मिक कथाओं और देवी—देवताओं के माध्यम से चित्रित किया है जिससे जनमानस पर इसका ज्यादा प्रभाव पड़े। लघु कथाकार डॉ. लता अग्रवाल ने शिव—पार्वती और नंदी के माध्यम से लघु कथा 'विषधारी' में प्लास्टिक के उपयोग से हो रहे नुकसान पर अपनी चिंता व्यक्त की है। यथा—

''माते मैं कैलाश पर बेलपत्र खा—खा कर थक गया था, सोचा भूलोक पर कुछ स्वादिष्ट मिलेगा। यहां आते ही मेरा सामना रंग—बिरंगी पन्नियों से हुआ, जिनके अंदर इस पृथ्वी की माताओं ने भोज्य सामग्री भर कर रखी थी। एक तो भूख, ऊपर से खूबसूरत रंग—बिरंगी पन्नियों ने मुझे मोह लिया। माते, मैंने उन्हें उदरस्थ कर लिया। परिणाम, सांस नहीं ले पा रहा हूं।''

''ओह ! तो तुमने लोभवश पॉलोथिन खा ली... यह तो बहुत घातक है। नंदी, इसके एक नहीं कई दुष्परिणाम हैं। तुमने अपना जीवन कष्ट में डाल लिया।'' शिव ने चिंतित भाग से कहा।''[6]

पर्यावरण में बढ़ रहे प्रदूषण से मनुश्य ही नहीं प्रकृति और पक्षी भी चीत्कार कर रहे हैं। पक्षियों की कई प्रजातियां लुप्त हो रही हैं। गिद्ध काफी समय पूर्व गायब हो चुके हैं। गौरैया भी आसानी से देखने को नहीं मिलतीं। लघु कथा 'गौरैया' में गौरैया और उसके बच्चे के बीच यहां निम्न प्रस्तुत संवाद जनमानस की आंखें खोलने के लिए पर्याप्त है।

''मां ! ..मां ! दम घुटता सा लग रहा है। पेड़ पर बने गौरैया के घोंसले में एक नवजात बच्चे ने चिचियाते हुए गौरैया से कहा।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

''हां ! मां मुझे भी कुछ–कुछ ऐसा लग रहा है। गले में खुश्की से सांस लेने में दिक्कत हो रही है।''

''कुछ देर ठहरो बच्चो, सब ठीक हो जाएगा। कूड़े वाले ने कूड़ा जलाया है, उसका धुंआ है। चिढ़े ने बच्चों को समझाते हुए कहा।

''कूड़ा तो रोज ही जलता है जी, मगर आज कुछ ज्यादा दम घुटता– सा लग रहा है।'' गौरैया अपने बच्चे की बात का समर्थन करते हुए बोली।''[7]

प्रकृति के साथ हो रही छेड़छाड़ और रसायनिकों के अंधाधुंध स्वार्थी प्रयोग ने भूमि को बंजर बना दिया है। डॉ. लता अग्रवाल ने अपनी लघु कथा में बंजर हो रही धरती के प्रति निम्न प्रकार अपनी चिंता व्यक्त की है। यथा–

''धरा मैं तुमसे बहुत नाराज हूं। गगन ने धरा पर क्रोध जताते हुए कहा।'' हे प्राणनाथ ऐसा आरोप न लगाओ मुझ पर, न मैंने अपनी उर्वरता खोई है, न ही मैं बांझ हुई हूं। अफसोस, आप भी आसमान की ऊंचाई पर बैठकर मेरा दुख न समझ पाए।

''दुख.... ऐसा कौन सा दुख है तुम्हें धरा, जो मैं नहीं देख पा रहा ?''

स्वामी, इन पृथ्वीवासियों ने मेरे गर्भ को प्लास्टिक से पूरित कर दिया है। जिससे आप का स्नेह मेरे दिल तक ही रहता है, गर्भ तक नहीं पहुंच पा रहा है। मुझमें कोई नया जीव अंकुरित हो तो कैसे... ? इस प्लास्टिक को भेदना मेरे बस की बात नहीं।''

जलवायु परिवर्तन और ओजोन परत के प्रभाव के कारण वर्शा का संतुलन बिगड़ रहा है। समय पर बारिश नहीं होती। बारिश असमान रूप से हो रही है। कहीं बादल फटते हैं तो कही बूंद–बूंद पानी को लोग और धरती तरस रही है। यह सब प्रकृति के साथ छेड़छाड़ का ही कुपरिणाम है। लघुकथाकार लता अग्रवाल ने इस चिंतनीय स्थिति का वर्णन पृथ्वी और बादल के बीच हुए संवाद के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया है–

''प्रिये इस प्लास्टिक नामक पदार्थ के जलने से वायुमंडल में क्लोरो–फ्लोरो कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा 3 गुना बढ़ गई है। नदियों का जल सूखने से वाष्पीकरण भी नहीं हो पा रहा। मैं रीतता जा रहा हूं। बरसना चाहकर भी नहीं बरस पा रहा। बस गरज कर रह जाता हूं। प्लास्टिक ने मुझे नपुंसक बना दिया है।'' कहते हुए बादल उदास हो गया।''[8]

पर्यावरण प्रदूशण का धीमा जहर धरती पर मौजूद जन–जीवन, पशु–पक्षियों की ही जान सांसत में नहीं डाल रहा बल्कि कोख में पल रहे बच्चों के लिए भी यह कितना घातक है ? इसका वर्णन यहां निम्न प्रस्तुत एक लघुकथा के अंश में लघु कथाकार ने प्लास्टिक के गिलासों के उपयोग पर सटीक और तथ्यात्मक चिंतन प्रस्तुत किया है। यथा–

''क्या हुआ है जीजी.. यह तो अच्छी क्वालिटी के प्याले हैं।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

''कितनी ही अच्छी क्वालिटी के क्यों ना हों आखिर हैं तो प्लास्टिक के ही...? जानती हो इसे बनाने में बिसाफिनॉल का प्रयोग किया जाता है।''

''बिसाफिनोल....!! वो क्या होता है जीजी ? ''

''ये बिसाफिनॉल एक जहरीला पदार्थ है। जब इसमें गर्म चाय डालते हैं तो इसका प्रभाव चाय के माध्यम से शरीर में जाकर बच्चे के विकास को रोकता है और उसकी स्मरण शक्ति को भी प्रभावित करता है। यह बच्चे के मस्तिष्क के विकास में बाधक होता है।''

''हे ! जीजी मैं तो अक्सर इन्हीं क्रोकरी का प्रयोग करती हूं।''

''अब तक करती रही राधा मगर अब जागो तभी सवेरा।''[9]

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पश्ट है कि आज का युग वैज्ञानिक और आधुनिक होते हुए भी पर्यावरण की दृश्टि से संकट का युग है। दिन– प्रतिदिन पर्यावरण प्रदूशित हो रहा है। जल संकट लगातार बढ़ रहा है। खेती की जमीन बंजर हो रही है। ओजोन परत का संकट भी कम होने का नाम नहीं ले रहा। वन क्षेत्रों में लगातार कमी हो रही है। प्लास्टिक उत्पादों और इससे उत्पन्न कचरा भी 'सुरसा के मुंह' के भांति लगातार बढ़ रहा है। मनुश्य, पशु–पक्षी और प्रकृति इस प्रदूशण से त्रस्त हैं। लेकिन फिर भी इस पर रोक लगाने के प्रभावी उपाय नहीं किए जा रहे। इस संबंध में सरकारी और गैरसरकारी स्तर पर किए जा रहे प्रयास 'नक्कारखाने में तूती की आवाज' बनकर रह गए हैं। साहित्य की अनेक विधाओं में साहित्यकारों ने इस पर चिंतन व्यक्त किया है। कहानी, उपन्यास साहित्य में इस पर खासी चिंता व्यक्त की गई है लेकिन लघु कथाओं में इस ज्वलंत और परमाव यक विशय पर लघुकथाकारों ने बहुत कम लेखन किया है। लघु कथा साहित्य की दृश्टि से इस महत्वपूर्ण विशय पर अभी और लेखन की आव यकता है।

संदर्भ–सूची

'भारतीय समाजिक संरचना'' : 'राजवीर सिंह' इशिका पब्लिकेशन, पृ0सं0 328
वही पृ0सं0 123
आपस्तंब धर्मसूत्र : श्लोक 3.7
मनुस्मृति वही अध्याय : 3–25
वही पृ0सं 3–25
ऋग्वेद संहिता, मंडल 10 वां सूक्त रिचा– 12
मनुस्मृति अध्याय 1 श्लोक 31
वही, अध्याय 1
वही, अध्याय 1

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language